संस्थापक
नानाजी देशमुख

प्रबन्ध सम्पादक
अमिताभ वशिष्ठ

सम्पादक
राकेश शुक्ला

आवरण सज्जा एवं लेआउट
अंशुमान सिंह
सतीश मालवीय
राजेश दुबे

विशेष सहयोग
आशीष सक्सेना

प्रबंधक
मेजर टी.आर.वर्मा (से.नि.)

प्रकाशक
अभय महाजन द्वारा
दीनदयाल शोध संस्थान के लिए,
7-ई, स्वामी रामतीर्थ नगर,
रानी झांसी मार्ग, झण्डेवाला एक्स.,
नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित
दूरभाष : 23526735/92
ईमेल : dridelhi@rediffmail.com

मुद्रक :
प्रीतिका प्रिंटर्स
ए-21/27, नारायणा इण्ड. एरिया,
फेस-2, दिल्ली-28

सम्पादकीय

बीते वर्ष, एक कृतज्ञ राष्ट्र ने एकात्म मानवदर्शन के प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय और समाज जीवन में उसे मूर्त रूप में उकेरने वाले, राष्टऋषि नानाजी देशमुख की जन्म शताब्दी मनाई। पंडित जी ने कोई छह दशक पहले एकात्म मानवदर्शन के माध्यम से देश और दुनिया के सामने भारतीय जीवन मूल्यों, भारत की सांस्कृतिक विशिष्टताओं व देशवासियों की आकांक्षाओं का एक खूबसूरत चित्रण किया था। अपने दर्शन को उन्होंने एक राजनैतिक फ्रेम में भी रखा। उनका चिंतन बहुकोणीय था, राष्ट्र जीवन के सभी आयामों का समावेश करने वाला। उनकी असामयिक मृत्यु के पश्चात, उनके सहयोगी नानाजी ने इस चिंतन को धरातल पर उतारने का बीड़ा उठाया। दीनदयाल शोध संस्थान के माध्यम से नानाजी ने गांवों में सर्वसमावेशी विकास का एक ऐसा मॉडल खड़ा किया जो आज देश-दुनिया में सबके लिए उदाहरण बन गया है।

निमित था दोनों महापुरुषों का जन्म शताब्दी वर्ष। भारत सरकार ने दोनों प्रेरणा पुरुषों की याद में उनकी जन्म शताब्दियों के बड़े स्तर पर मनाने का निर्णय लिया। इसके लिए संस्कृति मंत्रालय ने दीनदयाल शोध संस्थान को नॉलेज पार्टनर बनाया गया। संस्थान से अपेक्षा की गई कि वह देशभर में व्याख्यानों व गोष्ठियों आदि के माध्यम से एकात्म मानवदर्शन के विभिन्न आयामों पर चर्चाएं आयोजित करे। इसके लिए स्थानीय स्तर पर अन्यान्य संस्थाओं के साथ मिल कर ये कार्यक्रम आयोजित किए जाएं। संस्थान ने अपनी क्षमताओं से परे जाकर देशभर में 62 व्याख्यानों व 5 राष्ट्रीय गोष्ठियों आदि का आयोजन किया। इनमें से दो कार्यक्रमों में पूजनीय सरसंघचालक जी व चार में माननीय सरकार्यवाह जी के श्रीमुख से मार्गदर्शन का सौभाग्य मिला। दो में माननीय सहसरकार्यवाह जी रहे। और दो बड़े कार्यक्रमों में माननीय प्रधानमंत्री का सानिध्य प्राप्त हुआ। बहुत से कार्यक्रमों में केंद्र सरकार के अन्य मंत्रीगण तथा समाज के विभिन्न क्षेत्रों की विभूतियों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

इस पूरे वर्ष की उपलब्धि रही ऐसे स्थानों व वर्गों के बीच एकात्म मानवदर्शन पर चर्चा जहां तब तक इसके बारे में जानकारी नहीं थी। इंडिया इंटरनेशनल सेंटर व इंडिया हैबीटैट सेंटर और शिलांग से बाड़मेर व कोचीन, तथा तिरुवनंथपुरम से जम्मू तक एकात्म मानवदर्शन के विभिन्न आयामों पर चर्चा हुई। लोगों में इसके प्रति जिज्ञासा जागी। इसकी गहराइयों को अपने विद्वान वक्ताओं ने सम सामयिक संदर्भों में समझाने का अनुपम प्रयास किया। खासकर अंग्रेजीदां वर्ग में, जहां इसे अज्ञानतावश दरकिनार कर दिया जाता था। वहां एकात्म मानवदर्शन के मर्म को समझने की भूख बढ़ी। बौद्धिक गतिविधियों के अलावा संस्थान ने ग्रामोदय मेले के माध्यम से देश में विकास के महायज्ञ का विराट स्वरूप ग्रामवासियों को दिखाया। संस्थान के कार्यकर्ताओं के ऐसे ही बहुत से अन्य भागीरथी प्रयासों से ग्रामवासियों की भागीदारी बढ़ी। यही श्रद्धेय नानाजी का सपना था।

-अतुल जैन, प्रधान सचिव